अध्याय 2: तीन बुद्धिमान

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 20 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1	मेरी समझ से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 2.2	पंक्तियों पर चर्चा	3 प्रश्न
प्रश्नावली 2.3	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 2.4	सोच-विचार के लिए	7 प्रश्न
प्रश्नावली 2.5	अनुमान और कल्पना से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 2.6	कारक	1 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

लोककथा के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं। (1) लोककथा में पिता ने अपने बेटों से 'धन संचय करने' को कहा। उनकी इस बात का क्या अर्थ हो सकता है? • खेती-बारी करना और धन इकट्ठा करना • पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना ★ • ऊँट का व्यापार करना • गाँव छोड़कर किसी नगर में जाकर बसना

हल

पिता ने बेटों से भौतिक धन नहीं, बल्कि ज्ञान और बुद्धि का धन संचित करने को कहा था।
उन्होंने स्पष्ट कहा था— 'रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी।'
इसलिए सही उत्तर है: पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना।

उत्तर: ★ पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना

प्रश्न 2

(2) तीनों भाइयों ने अपने ज्ञान और बुद्धि का उपयोग करके ऊँट के बारे में बहुत-कुछ बता दिया। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है? • बुद्धि का प्रयोग करके ऊँट के बारे में सब-कुछ बताया जा सकता है। • समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है। ★ • किसी व्यक्ति का ज्ञान, बुद्धि और धन ही सबसे बड़ी ताकत है। • ऊँट के बारे में जानने के लिए दूसरों पर भरोसा करना चाहिए।

हल

भाइयों ने ऊँट को देखे बिना केवल धूल पर पड़े पैरों के चिह्नों, सड़क के दोनों ओर की घास, और ऊँट के घुटने टेकने के निशानों के आधार पर सब कुछ बता दिया।
इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने से समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं।
सही उत्तर: समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है।

उत्तर: ★ समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 3

(3) राजा ने भाइयों की बुद्धिमत्ता पर विश्वास क्यों किया? • भाइयों ने अपनी बात को तर्क के साथ समझाया। ★ • राजा को ऊँट के स्वामी की बातों पर संदेह था। • राजा ने स्वयं ऊँट और पेटी की जाँच कर ली थी। • भाइयों ने राजा को अपनी बात में उलझा लिया था।

हल

भाइयों ने राजा को तर्कपूर्ण ढंग से समझाया कि उन्होंने किस प्रकार ऊँट के निशानों, घास चरने के ढंग और रेत पर पड़े पैरों के चिह्नों से सब कुछ जाना।

उन्होंने पेटी में रखी गोल वस्तु को उसकी ध्वनि, वजन और बगीचे की दिशा से अनार बताया — जो सही निकला।

राजा ने देखा कि उनका तर्क और प्रमाण सटीक थे, इसलिए उसने उनकी बुद्धिमत्ता पर विश्वास किया।

उत्तर: ★ भाइयों ने अपनी बात को तर्क के साथ समझाया।

प्रश्न 4

(4) लोककथा के पात्रों और घटनाओं के आधार पर, राजा के निर्णय के पीछे कौन-सा मूल्य छिपा है? • दोषी को कड़े से कड़ा दंड देना हर समस्या का सबसे बड़ा समाधान है। • अच्छी तरह जाँच किए बिना किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए। ★ • राजा की प्रत्येक बात और निर्णय को सदा सही माना जाना चाहिए। • ऊँट की चोरी के निर्णय के लिए सेवक की बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

हल

राजा ने पहले भाइयों को दोषी मान लिया था, लेकिन उन्होंने बिना प्रमाण के सजा नहीं दी।

उसने पेटी वाली परीक्षा से उनकी सच्चाई जाँची और जब भाइयों ने कच्चा अनार सही बताया, तब उन्हें निर्दोष माना।

यह दर्शाता है कि राजा का मूल्य था — बिना जाँच किसी को दोषी नहीं ठहराना।

उत्तर: ★ अच्छी तरह जाँच किए बिना किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए।

प्रश्नावली 2.2 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? (क) "रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।"

हल

पिता अपने बेटों को समझा रहे हैं कि असली धन रुपया-पैसा या सोना-चाँदी नहीं है।
पैनी दृष्टि (हर चीज को ध्यान से देखने की शक्ति) और तीव्र बुद्धि (तेज सोचने की क्षमता) ही सच्चा धन है।
'उन्नीस नहीं रहोगे' का अर्थ है — किसी से कम नहीं रहोगे, सदा आगे रहोगे।
यह पंक्ति यह संदेश देती है कि ज्ञान और बुद्धि का धन कभी खर्च नहीं होता और हर परिस्थिति में काम आता है।

उत्तर: पिता का संदेश है कि पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि ही सच्चा धन है — यह धन कभी खत्म नहीं होता और व्यक्ति को सदा सक्षम बनाए रखता है।

प्रश्न 2

(ख) "हर वस्तु और स्थिति को पूर्णतः समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए।"

हल

पिता बेटों को जीवन में सतर्क और जागरूक रहने की सीख दे रहे हैं।
इस पंक्ति का अर्थ है — हर छोटी-बड़ी वस्तु और घटना को ध्यान से समझो, कुछ भी आँखों से ओझल न हो।
यही आदत तीनों भाइयों ने डाली थी, जिसके कारण वे ऊँट को देखे बिना भी उसके बारे में सब कुछ बता सके।

उत्तर: हर वस्तु और परिस्थिति पर पूरा ध्यान देना चाहिए — कुछ भी बिना गौर किए नहीं छोड़ना चाहिए। यही सच्ची जागरूकता और ज्ञान का आधार है।

प्रश्न 3

(ग) "हमने अपने परिवेश को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है।"

हल

यह पंक्ति भाइयों ने राजा को अपनी असाधारण क्षमता का रहस्य बताते हुए कही।
इसका अर्थ है — यह कोई जादू नहीं, बल्कि वर्षों की मेहनत और अभ्यास का परिणाम है।
बचपन से आसपास की हर चीज को ध्यान से देखते और सोचते रहे, इसीलिए अब हर चीज का अनुमान लगाना उनके लिए सरल हो गया है।
यह पंक्ति यह सिखाती है कि निरंतर अभ्यास से असाधारण क्षमता प्राप्त की जा सकती है।

उत्तर: वर्षों के लगातार अभ्यास — ध्यान से देखने और बुद्धि से सोचने — के कारण भाइयों ने यह असाधारण क्षमता विकसित की। यह कोई जन्मजात प्रतिभा नहीं, बल्कि निरंतर परिश्रम का फल है।

प्रश्नावली 2.3 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

इस लोककथा में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे स्तंभ 1 में दिए गए हैं। उनके भाव या अर्थ से मिलते-जुलते वाक्य स्तंभ 2 में दिए गए हैं। स्तंभ 1 के वाक्यों को स्तंभ 2 के उपयुक्त वाक्यों से सुमेलित कीजिए— स्तंभ 1: 1. कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे। 2. हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे। 3. घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा। 4. बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। 5. लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था। स्तंभ 2: 1. घोड़े पर सवार व्यक्ति ने तीनों भाइयों को अविश्वास से देखा। 2. थोड़े समय के बाद पिता का देहांत हो गया। 3. लोग इतने अचंभित थे कि उनका आश्चर्य व्यक्त करना कठिन था। 4. बचपन से ही हमें आदत हो गई है कि हम हर छोटी-बड़ी वस्तु पर ध्यान अवश्य देते हैं। 5. हम चाहे जहाँ भी हों, हमें खाने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।

हल

स्तंभ 1 → स्तंभ 2 का सुमेलन:

1. कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे → 2. थोड़े समय के बाद पिता का देहांत हो गया।
2. हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे → 5. हम चाहे जहाँ भी हों, हमें खाने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।
3. घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा → 1. घोड़े पर सवार व्यक्ति ने तीनों भाइयों को अविश्वास से देखा।
4. बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते → 4. बचपन से ही हमें आदत हो गई है कि हम हर छोटी-बड़ी वस्तु पर ध्यान अवश्य देते हैं।
5. लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था → 3. लोग इतने अचंभित थे कि उनका आश्चर्य व्यक्त करना कठिन था।

उत्तर: 1→2, 2→5, 3→1, 4→4, 5→3

प्रश्नावली 2.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

(क) तीनों भाइयों ने बिना ऊँट को देखे उसके विषय में कैसे बता दिया था?

हल

सबसे बड़े भाई ने: धूल पर ऊँट के पैरों के गहरे चिह्नों से जाना कि बहुत बड़ा ऊँट वहाँ से गया है।
मझले भाई ने: सड़क के दाईं ओर की घास चरी हुई थी, लेकिन बाईं ओर की घास ज्यों की त्यों थी — इससे अनुमान लगाया कि ऊँट एक आँख से नहीं देख पाता था।
सबसे छोटे भाई ने: एक स्थान पर ऊँट के घुटने टेककर बैठने के चिह्न थे और पास ही रेत पर एक महिला के जूतों और छोटे पैरों के निशान थे — इससे जाना कि ऊँट पर एक महिला और एक बच्चा सवार थे।
बचपन से अभ्यास की हुई पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि के कारण उन्होंने सामान्य चिह्नों से असाधारण निष्कर्ष निकाले।

उत्तर: तीनों भाइयों ने धूल पर पैरों के चिह्न, सड़क के एक ओर चरी हुई घास और रेत पर महिला-बच्चे के पदचिह्नों जैसे सूक्ष्म संकेतों के आधार पर ऊँट के बारे में सब कुछ बता दिया।

प्रश्न 2

(ख) आपके अनुसार इस लोककथा में सबसे अधिक महत्व किस बात को दिया गया है— तार्किक सोच, अवलोकन या सत्यवादिता? लोककथा के आधार पर समझाइए।

हल

इस लोककथा में सबसे अधिक महत्व अवलोकन (ध्यानपूर्वक निरीक्षण) को दिया गया है।
तीनों भाइयों ने बिना ऊँट देखे, केवल सूक्ष्म निशानों — पैरों के चिह्न, चरी हुई घास, पदचिह्न — के आधार पर सब कुछ बताया, जो शुद्ध अवलोकन का परिणाम है।
तार्किक सोच भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भाइयों ने इन संकेतों से तर्कपूर्ण निष्कर्ष निकाले, जैसे — एक तरफ घास न चरना → एक आँख से अंधा।
सत्यवादिता का महत्व भी है — भाइयों ने राजा के सामने सच बोला, भले ही परिस्थिति कठिन थी।
किंतु लोककथा का मूल संदेश यह है: पिता ने 'पैनी दृष्टि' को ही सबसे बड़ा धन बताया, और सारी घटनाएँ उसी अवलोकन शक्ति पर केंद्रित हैं।

उत्तर: इस लोककथा में सबसे अधिक महत्व अवलोकन (पैनी दृष्टि से देखना) को दिया गया है। पिता ने भी यही सीख दी थी और भाइयों ने इसी के बल पर सब कुछ बिना देखे जाना।

प्रश्न 3

(ग) लोककथा में राजा ने पहले भाइयों पर संदेह किया लेकिन बाद में उन्हें निर्दोष माना। राजा की सोच क्यों बदल गई?

हल

पहले राजा ने ऊँट के स्वामी की बात सुनकर भाइयों को दोषी मान लिया, क्योंकि बिना बताए ऊँट के बारे में जानना संदिग्ध लगा।
लेकिन भाइयों ने अपनी बात तर्क और प्रमाण के साथ समझाई — कि उन्होंने धूल के चिह्न, घास और पदचिह्नों से यह जानकारी प्राप्त की।
राजा ने पेटी की परीक्षा से उनकी सच्चाई जाँची — भाइयों ने बंद पेटी में कच्चा अनार होने की बात सही बताई।
जब पेटी खुली और वास्तव में कच्चा अनार निकला, तब राजा को पूर्ण विश्वास हो गया कि ये तीनों सच्चे और बुद्धिमान हैं, चोर नहीं।

उत्तर: पेटी में कच्चा अनार होने की सटीक भविष्यवाणी और भाइयों के तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण ने राजा को विश्वास दिलाया कि ये निर्दोष और असाधारण बुद्धिमान लोग हैं।

प्रश्न 4

(घ) ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर तुरंत संदेह क्यों किया? आपके विचार से उसे क्या करना चाहिए था जिससे उसे अपना ऊँट मिल जाता?

हल

ऊँट के स्वामी ने इसलिए संदेह किया क्योंकि भाइयों ने बिना बताए ही उसके ऊँट के बारे में — उसका आकार, एक आँख से न देख पाना, और उस पर सवार महिला व बच्चे के बारे में — सब कुछ सही बताया।
उसे लगा कि ये जानकारी तभी हो सकती है जब उन्होंने ऊँट को स्वयं देखा और पकड़ा हो।
उसे क्या करना चाहिए था: भाइयों की बात शांति से सुनना चाहिए था। जब भाइयों ने कहा कि ऊँट उस दिशा में गया है, तो उसी दिशा में जाकर खोजना चाहिए था।
तलवार निकालकर जबरदस्ती करने की बजाय पहले स्वयं उस दिशा में जाँच करता, तो उसे अपना ऊँट शीघ्र मिल जाता।

उत्तर: ऊँट के स्वामी ने जल्दबाजी में भाइयों पर संदेह किया। उसे चाहिए था कि भाइयों की बात मानकर पहले उस दिशा में जाता जहाँ उन्होंने ऊँट जाने का संकेत दिया था।

प्रश्न 5

(ङ) पिता ने बेटों को 'दूसरे प्रकार का धन' संचित करने की सलाह क्यों दी? इससे पिता के बारे में क्या-क्या पता चलता है?

हल

पिता गरीब थे और उनके पास बेटों को देने के लिए रुपया-पैसा या संपत्ति नहीं थी।
वे जानते थे कि भौतिक धन खर्च होता है, चुराया जा सकता है, लेकिन ज्ञान और बुद्धि का धन कोई नहीं छीन सकता।
इसलिए उन्होंने बेटों को पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि विकसित करने की सलाह दी — यही उनके लिए 'दूसरा धन' था।
इससे पिता के बारे में पता चलता है: वे दूरदर्शी थे और जीवन का व्यावहारिक ज्ञान रखते थे; वे परिवार की भलाई चाहते थे; वे शिक्षा और ज्ञान को भौतिक संपत्ति से श्रेष्ठ मानते थे।

उत्तर: पिता ने यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वे भौतिक धन नहीं दे सकते थे, लेकिन वे जानते थे कि पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि ऐसा धन है जो जीवन में सदा काम आता है। वे दूरदर्शी, बुद्धिमान और परिवार की सच्ची भलाई चाहने वाले थे।

प्रश्न 6

(च) राजा ने भाइयों की परीक्षा लेने के लिए पेटी का उपयोग किया। इस परीक्षा से राजा के व्यक्तित्व और निर्णय शैली के बारे में क्या-क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

हल

राजा ने बिना पूरी जाँच किए भाइयों को दोषी नहीं ठहराया — यह दर्शाता है कि वे न्यायप्रिय और विवेकशील थे।
उन्होंने स्वयं परीक्षा का तरीका सोचा और मंत्री को गुप्त रूप से निर्देश दिया — यह उनकी बुद्धिमत्ता और योजनाबद्ध सोच को दर्शाता है।
जब भाइयों ने परीक्षा सफलतापूर्वक पास की, तो राजा ने तुरंत उन्हें निर्दोष माना और सम्मान दिया — यह उनकी निष्पक्षता को दर्शाता है।
निष्कर्ष: राजा न्यायी, विवेकशील, दूरदर्शी और बुद्धिमान शासक थे जो प्रमाण के आधार पर निर्णय लेते थे।

उत्तर: इस परीक्षा से पता चलता है कि राजा न्यायप्रिय, बुद्धिमान और प्रमाण-आधारित निर्णय लेने वाले शासक थे। वे जल्दबाजी में दोष नहीं लगाते थे।

प्रश्न 7

(छ) आप इस लोककथा के भाइयों की किस विशेषता को अपनाना चाहेंगे और क्यों?

हल

इस लोककथा के भाइयों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है — ध्यानपूर्वक अवलोकन करना और हर छोटी-बड़ी चीज पर ध्यान देना।
यह विशेषता अपनाने योग्य है क्योंकि इससे हम अपने आसपास की घटनाओं को बेहतर समझ सकते हैं।
साथ ही भाइयों की सत्यवादिता भी अपनाने योग्य है — संकट में भी उन्होंने झूठ नहीं बोला।
इन दोनों गुणों — पैनी दृष्टि और सच्चाई — को अपनाने से जीवन में सही निर्णय लिए जा सकते हैं।

उत्तर: भाइयों की पैनी दृष्टि (हर चीज को ध्यान से देखना) और सत्यवादिता — ये दोनों विशेषताएँ अपनाने योग्य हैं क्योंकि ये जीवन में हर समस्या को सुलझाने में सहायक होती हैं।

प्रश्नावली 2.5 — अनुमान और कल्पना से

प्रश्न 1

(क) यदि राजा ने बिना जाँच के भाइयों को दोषी ठहरा दिया होता तो इस लोककथा का क्या परिणाम होता?

हल

यदि राजा ने बिना जाँच किए भाइयों को दोषी ठहरा दिया होता, तो तीनों निर्दोष भाइयों को अन्यायपूर्ण दंड मिलता।
असली चोर (यदि कोई होता) कभी नहीं पकड़ा जाता और ऊँट का स्वामी को अपनी पत्नी व बच्चे नहीं मिलते।
लोककथा का संदेश — 'बिना प्रमाण किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए' — पूरी तरह नष्ट हो जाता।
राजा न्यायप्रिय शासक की बजाय मनमाना निर्णय लेने वाला राजा बन जाता और लोककथा का अंत दुखद होता।

उत्तर: यदि राजा ने बिना जाँच किए दोषी ठहराया होता, तो निर्दोष भाइयों को अन्यायपूर्ण दंड मिलता, ऊँट का स्वामी अपनी पत्नी-बच्चे से नहीं मिल पाता, और लोककथा का न्याय-संदेश नष्ट हो जाता।

प्रश्न 2

(ख) यदि भाइयों ने अनार के बारे में सही अनुमान न लगाया होता तो लोककथा का अंत किस प्रकार होता? अपने विचार व्यक्त करें।

हल

यदि भाइयों ने पेटी में अनार होने का सही अनुमान न लगाया होता, तो राजा को उनकी सच्चाई का कोई प्रमाण नहीं मिलता।
संभवतः राजा उन्हें चोर मान लेता और उन्हें दंडित करता।
इस परीक्षा से राजा ने उनकी बुद्धिमत्ता को प्रमाणित किया था — अगर यह परीक्षा असफल रहती, तो उनकी सच्चाई संदिग्ध ही रहती।
लोककथा का अंत दुखद होता — तीनों बुद्धिमान भाई दंडित होते और उनकी असाधारण प्रतिभा अपमानित होती।

उत्तर: यदि अनार का सही अनुमान न लगाया होता, तो राजा की परीक्षा में वे असफल होते, दोषी ठहराए जाते और लोककथा का अंत दुखद होता।

प्रश्न 3

(ग) लोककथा में यदि तीनों भाई ऊँट को खोजने जाते तो उन्हें कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था?

हल

भाई पहले से ही चालीस दिनों की थकाऊ यात्रा के बाद भूखे और थके हुए थे — और अधिक चलना उनके लिए कठिन होता।
यदि वे ऊँट को खोजने जाते, तो समय बर्बाद होता और उन्हें नगर में प्रवेश मिलने में देरी होती।
ऊँट के स्वामी ने तलवार निकाल ली थी — यदि वे खोजने जाते और ऊँट न मिलता, तो संघर्ष हो सकता था।
अनजाने पहाड़ी रास्तों में ऊँट ढूँढना कठिन होता, और नगर के बाहर उन्हें सुरक्षा का खतरा भी हो सकता था।

उत्तर: यदि भाई ऊँट खोजने जाते तो उन्हें थकान, भूख, रास्ते की कठिनाई और ऊँट के स्वामी से संभावित संघर्ष जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता।

प्रश्न 4

(घ) यदि राजा के स्थान पर आप होते तो भाइयों की परीक्षा लेने के लिए किस प्रकार के सवाल या गतिविधियाँ करते? अपनी कल्पना साझा करें।

हल

यदि मैं राजा के स्थान पर होता, तो पहले भाइयों से अपनी पैनी दृष्टि के बारे में पूछता और उनकी तर्क शक्ति परखता।
फिर दरबार में किसी छिपी हुई वस्तु — जैसे एक बंद थैले में फल — को पहचानने के लिए कहता।
या किसी व्यक्ति को दूर से देखकर उसके बारे में जानकारी देने को कहता — जैसे वह कितनी दूर से आया, कितना थका हुआ है।
इस तरह की व्यावहारिक परीक्षाओं से उनकी वास्तविक अवलोकन शक्ति का प्रमाण मिलता।

उत्तर: मैं राजा के स्थान पर होता तो किसी बंद पात्र में वस्तु पहचानने की, या दूर से किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी बताने की गतिविधि करता — इससे उनकी वास्तविक अवलोकन शक्ति परखी जाती।

प्रश्नावली 2.6 — कारक

प्रश्न 1

नीचे दिए गए वाक्यों में कारक लिखकर इन्हें पूरा कीजिए— 1. "हमने तो तुम्हारे ऊँट ___ देखा तक नहीं", भाइयों ___ परेशान होते हुए कहा। 2. "मैं अपने रेवड़ों ___ पहाड़ों ___ लिये जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे ___ साथ एक बड़े-से ऊँट ___ मेरे पीछे-पीछे आ रही थी।" 3. राजा ___ उसी समय अपने मंत्री ___ बुलाया और उसके कान ___ कुछ फुसफुसाया। 4. यह सुनकर राजा ___ पेटी ___ पास लाने ___ आदेश दिया। सेवकों ___ तुरंत आदेश पूरा किया। राजा ___ सेवकों ___ पेटी खोलने ___ लिए कहा।

हल

कारक वे शब्द हैं जो संज्ञा/सर्वनाम का क्रिया से संबंध जोड़ते हैं। जैसे: ने, को, पर, से, के द्वारा, का, में, के लिए, की, के, हे, हो, अरे।

वाक्य 1: 'को' (ऊँट को), 'ने' (भाइयों ने)

वाक्य 2: 'को' (रेवड़ों को), 'पर' (पहाड़ों पर), 'के' (बेटे के), 'पर' (ऊँट पर)

वाक्य 3: 'ने' (राजा ने), 'को' (मंत्री को), 'में' (कान में)

वाक्य 4: 'ने' (राजा ने), 'को' (पेटी को), 'का' (लाने का), 'ने' (सेवकों ने), 'ने' (राजा ने), 'से' (सेवकों से), 'के' (खोलने के)

उत्तर: 1. को, ने | 2. को, पर, के, पर | 3. ने, को, में | 4. ने, को, का, ने, ने, से, के